कबीरा सोई पीर है
जो जाणे पर पीर

पोथी पढ़ पढ़ जग मुवा
कोई ढाई आखर प्रेम

पंडित भया ना कोई
का पढ़े सो पंडित होई

कबीर भजनों का संकलन

अनुक्रमणिका

1]	सन्तो देखत जग बौराना	1
2]	क्यों भूलिगी थारो देश	3
3]	अवधू भजन भेद है न्यारा	5
4]	कोई सफा न देखा दिल का	7
5]	मौको कहाँ ढूंढे रे बन्दे	9
6]	तेरा मेरा मनुवा	10
7]	भाई रे दुई जगदीश कहाँ ते आया	12
8]	कहाँ से आया कहाँ जाओगे	14
9]	जोगी मन नी रंगाया	16
10]	पंडित छाण पियो जल पाणी	17
11]	अवधू दोनों दीन कसाई	19
12]	साधौ पांडे निपुन कसाई	21
13]	मन तुम नाहक दूंद मचाये	23
14]	पंडित वाद वदे सो झूठा	25
15]	धातु की धेनु दूध नहीं देती	27
16]	मुल्ला कहो किताब की बातें	29
17]	जा बसे निरंजन राय	31
18]	नाम से मिल्या ना कोई	33
19]	म्हारो हीरो हेराणो कचरा में	35
20]	मानुष तन बौराणा	36
21]	बेराग कठे है मेरा भाई	38
22]	तन काया का मन्दिर	40
23]	अमल करे सो पाई	42
24]	ना जाने तेरा साहेब कैसा है	44
25]	पंडित तुम कैसे उत्तम कहाये	46
26]	जब मैं भूला रे भाई	47
27]	भक्ति करो ब्रम्हांड में	49
28]	घट-घट में रामजी बोले	51
29]	संदर्भ ग्रंथ	53

सन्तो देखत जग बौराना

साखी- वही महादेव वही मुहम्मद,
ब्रम्हा आदम कहिए।
को हिन्दू को तुरूक कहावै,
एक जिमी पर रहिए ॥

टेक- सन्तो देखत जग बौराना[1]
साँच कहो तो मारन धावै[2]
झूठे जग पतियाना[3] ॥

चरण- नेमी देखा धर्मी देखा,
प्रात करे असनाना।
आतम[4] मारि पषाणहि[5] पूजे,
उनमें किछउ न ज्ञाना ॥ टेक
बहुतक देखा पीर औलिया,[6]
पढ़े कितेब कुराना।
कै मुरीद[7] तदबीर[8] बतावै,
उनमें उहै जो ज्ञाना ॥ टेक ॥
आसन मारि डिम्भ धरि बैठे,
मन में बहुत गुमाना ।
पीतर पाथर पूजन लागे,
तीरथ गर्भ भुलाना ॥ टेक ॥
टोपी पहिरे माला पहिरे,

छाप तिलक अनुमाना ।
साखी शब्दै गावत भूले,
आतम खबरि न जाना ।। टेक ।।
हिन्दू कहै मोहिं राम पियारा,
तुरूक कहै रहिमाना ।
आपुस में दोउ लरि लरि मूये,
मर्म न काहू जाना ।। टेक ।।
घर घर मन्तर देत फिरत हैं,
महिमा के अभिमाना ।
गुरु सहित शिष्य सब बूड़े,[9]
अन्त काल पछिताना ।। टेक ।।
कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो,
ई सब भरम भुलाना ।
केतिक[10] कहौ कहा नहिं माने,
सहजे सहज समाना ।। टेक ।।

---

1. पगलाना (उन्मत्त होना) 2. दौड़ना
3. विश्वास करना 4. जीवित (आत्मा)
5. पत्थर 6. मुसलमान साधु (फकीर)
7. शिष्य 8. उपाय 9. डूबना (पश्चाताप करना 10. कितनी बार।

क्यों भूलीगो थारो देस

साखी- ऐसी मति संसार की,
ज्यों गाडर का ठाठ[1] ।
एक पड़ा जेहि गाड़[2] में,
सबै जाहि तेहि बाट ।।

टेक- क्यों भूलीगी थारो देस दीवानी
क्यों भूलीगी थारो देस हो–

चरण- भूली मालण[3] पाती रे तोड़े,
पाती पाती में जीव हे रे ।
पाती तोड़ देवत को चड़ाई,
वो देवत नरजीव[4] बावरी ।।टेक।।
डाली ब्रम्हा पाती बिसनु,
फूल शंकर देव हे ।
फूल तोड़ देवत को चड़ाई,
वो देवत नरजीव ।। टेक ।।
गारा की गणगौर[5] बणाई,
पूजे लोग लुगाई हो ।
पकड़ टाँग पाणी में फेंकी,
कहाँ गई सकलाई[6] ।। टेक ।।
देस देस का भोपा[7] बुलाया,

घर माय बैठ घुमाया हो ।
नायल[8] फोड़ नरेटी[9] चढ़ावे,
गोला[10] खुद गटकावे ॥ टेक ॥
दूधा भात की खीर बणाई,
खीर देवत को चढ़ावे ।
देवत ऊपर कुत्ता रे मुते,
खीर गीलोरी[11] गटकावे ॥ टेक ॥
जीता बाप को जूतम जूता,
मर्‌या के गंगाजी पहूंचावे ।
भूखा था जब भोजन ना दिया,
कव्वा[12] बाप बणावे ॥ टेक ॥
भेरु भवानी आगे छोरा छोरी मांगे,
सिर बकरा का सांटे[13] ।
कहे कबीर सुणो रे भई साधो,
पूत[14] पराया मत काटे ॥ टेक ॥

---

1. झण्ड 2. किचड़ 3. बागवान की पत्नी
4. अचेतन (निर्जिव) 5. एक प्रतिमा (जो विशेष पर्व पर बनाते है) 6. सच्चाई 7. जाण (ऐसा मानते है कि ये उस देवता के प्रतिनिधि होते हैं) 8. नरियल 9. नरियल का खोल
10. नरियल का गीर 11. गिलहरी 12. कौआ
13. बदले में (चढ़ाकर) 14. पुत्र ।

अवधू भजन भेद है न्यारा

साखी- माला फेरत जुग गया,
गया न मन का फेर ।
कर का मनका डारि के,
मन का मनका फेर ॥

टेक- अवधू , भजन भेद है न्यारा ।

चरण- क्या गाये क्या लिखी बतलाये,
क्या भर्मे[1] संसारा ।
क्या संध्या–तर्पण के कीन्हें,
जो नहि तत्व बिचारा ॥ टेक ॥
मुंड मुड़ाये सिर जटा रखाये,
क्या तन लाये छारा[2] ।
क्या पूजा पाहन के कीन्हें,
क्या फल किये अहारा ॥ टेक ॥
बिन परिचै साहिब हो बैठे,
विषय करै व्यवहारा ।

ग्यान–ध्यान का मर्म[3] न जाने,
बात करे अहंकारा ।। टेक ।।
अगम अथाह महा अति गहरा,
बीज खेत निवारा[4] ।
महा तो ध्यान मगन है बैठे,
काट करम की छारा ।। टेक ।।
जिनके सदा अहार अंत में,
केवल तत्व विचारा ।
कहै कबीर सुनो हो गोरख,
तारौ सहित परिवारा ।। टेक ।।

---

1. भ्रमित होना
2. भभूत रमाना
3. भेद
4. डालना

कोई सफा न देखा दिल का

साखी- कबीर संगत साधु को,
नीत[1] प्रीत कीजे जाय ।
दुर्मति दूर बहावसि[2],
देखी, सूरत जगाय ।।

टेक- कोई सफा न देखा दिल का ।

चरण- बिल्ली देखी बगला देखा,
सर्प जो देखा बिल का ।
ऊपर–ऊपर सुन्दर लागे,
भीतर गोला मल[3] का ।। टेक ।।
काजी देखा मोला देखा,
पंडित देखा छल का ।
औरन[4] को बैकुंठ बताये,
आप नरक में सरका[5] ।। टेक ।।
पढ़े लिखे नहीं, गुरूमंत्र को,
भरा गुमान कुमति का ।

बैठे नहीं साधु संगत में,
वरण[6] करे जाति का ।। टेक ।।
मोह की फाँसी पड़ी गले में,
भाव करे नारी का ।
काम क्रोध दिन रात सतावै,
लानत[7] ऐसे तन का ।। टेक ।।
सतनाम की मोठी पकड़ ले,
छोड़ कपट सब दिल का ।
कहै कबीर सुणों सुलताना,
पैरों फकीरी खिलका[8] ।। टेक ।।

---

1. हमेशा
2. बहाना
3. गंदगी
4. दूसरों को
5. जाना, पड़ना
6. अभिमान
7. अफसोस
8. वेशभूषा

मौको[1] कहां ढूंढे रे बन्दे

साखी- दौड़त-दौड़त दौड़िया,
जहाँ तक मन की दौड़
दौड़ थका मन थिर[2] हुआ,
तो वस्तु ठौर की ठौर ।।

टेक- मौको कहां ढूंढे रे बन्दे में तो तेरे पास ।

चरण- ना मैं देवल[3] न मैं मसजिद,
ना काबे कैलास में ।
ना तो कौनों क्रिया करम में,
नहीं योग बैराग में ।। टेक ।।
ना मैं छगरी ना मैं भेड़ी,
ना मैं छूरी गंडास में ।
नहीं खाल में नहीं पूंछ में,
ना हड्डी ना माँस में ।। टेक ।।
खोजी होय तो तुरत मिलिहो[4],
पल भर की तलाश में ।
कहे कबीर सुणों भाई साधो,
सब स्वाँसों की स्वाँस में ।। टेक ।।

1. मुझे 2. स्थिर होना 3. मन्दिर 4. मिलना

तेरा मेरा मनुवा

साखी- सात दीप नौ खण्ड में,
सतगुरू फेंकी डोर ।
हंसा डोरी ना चढ़े,
तो क्या सतगुरु का जोर ।

टेक- तेरा मेरा मनुवा कैसे एक होई रे ।

चरण- मैं कहता हो आंखिन देखी,
तु कहता कागद की लेखी ।
मैं कहता सुरझावन[1] हारी,
तु राख्यौ उरझाई[2] रे । टेक ।
मैं कहता जागत रहियो,
तु रहता है सोई रे ।
मैं कहता निर्मोही रहियो,
तु जाता है मोही रे । टेक ।
जुगन-जुगन समुझावत हारा,
केणो न मानत कोई रे ।

राह भी अंधी, चाल भी अंधी,
सबधन डारा खोय रे । टेक ।
सतगुरू धारा निर्मल बैवे,
वामें[3] काया धोई रे ।
कहत कबोर सुणों भई साधो,
तब वैसा ही होई रे । टेक ।

1. सुलझाने की 2. उलझाने की 3. उसमें

भाई रे दुइ जगदीश कहाँ ते आया

साखी- हिरदा भीतर आरसी,[1]
मुख देखा नहिं जाय ।
मुख तो तबहि देखहि,
जो दिल की दुविधा[2] जाय ।

टेक- भाई रे दुइ जगदीश कहाँ ते आया
कह कौनें भरमाया ।

चरण- भाई रे दुइ जगदीश कहां ते आया,
कहुं कौनें भरमाया ।
अल्लाह राम करीमा केशव,
हरि हजरत नाम धराया । टेक ।
गहना एक ते कनक ते गहना,
इन में भाव न दूजा ।
कहन सुनन को दो करिथापे,[3]
इक निंमाज इक पूजा । टेक ।
वही महादेव वही मुहम्मद,
ब्रम्हा आदम कहिये ।
कोई हिन्दू कोई तुरक कहावै,

एक जिमी पर रहिये । टेक ।

वेद कितेब पढ़े वे कुतबा,
वे मौलाना वे पांडे ।
बेगर बेगर नाम धरायो,
एक मटिया के भांडे । टेक ।

कहहिं कबीर इ दोनों भूले,
रामहिं किनहूं न पाया ।
वे खस्सी[4] वे गाय कटावैं,
बादहिं जन्म गमाया । टेक ।

1. कांच (शीशा)
2. भ्रम
3. स्थापना करना
4. बकरी

कहाँ से आया कहाँ जाओगे

साखी- अलख[1] इलाही[2] एक है,
नाम धराया दोय ।
कहे कबीर दो नाम सुनी,
भरम[3] पड़ो मति कोय ।

टेक- कहाँ से आया कहाँ जाओगे,
खबर करो अपने तन की ।
सत्गुरू मिले तो भेद बतावें,
खुल जाय अन्तर घट की ।

चरण- हिन्दू मुसलिम दोनों भुलाने,
खटपट माय रिया[4] अटकी[5] ।
जोगी जंगम शेख सन्यासी,
लालच माय रिया भटकी । टेक ।
काजी बैठा कुरान बांचे,
जमी जोर वो करे चटकी ।
हर दम साहेब नहीं पेचाना,

पकड़ा मुरगी ले पटकी । टेक ।

माला मुन्दरा तिलक छापा,
तीरथ बरत में रिया भटकी[6] ।
गावे बजावे लोक रिझावे,
खबर नहीं अपने तन की । टेक ।

बाहर बैठा ध्यान लगावे,
भीतर सुरता रही अटकी ।
बाहर बंदा भीतर गंदा,
मन मैल मछली झटकी । टेक ।

बिना विवेक से गीता बांचे,
चेतन को लगी नहीं चटकी ।
कहे कबीर सुणों भाई साधो,
आवागमन में रिया भटकी । टेक ।

1. ईश्वर
2. अल्ला
3. भ्रमित होना
4. रहे/पड़े
5. लगना
6. भ्रमित होना

जोगी मन नी रंगाया

साखी- सिद्ध भया तो क्या भया,
चहु दिस[1] फूटि बास[2] ।
अन्तर वाके बीज है,
फिर उगन की आस[3] ।

टेक- जोगी मन नी रंगाया,
रंगाया कपड़ा ।
पाणी में न्हाई-न्हाई पूजा फतरा[4],
तने मन नी रंगाया ।

चरण- जाई जंगल जोगी धुणी लगाई हो,
राख लगाई ने होया गदड़ा । टेक ।
जाई जंगल जोगी आसन लगाया,
डाडी रखाई ने होया बकरा ।टेक ।
मुंड मुंडाई जोगी, जटा बड़ाई हो,
कामी जलाई ने होया हिजड़ा ।टेक ।
दूध पियेगा जोगी बालक बछवा हो,
गुफा बणाई ने होया उन्दरा ।टेक।
कहे कबीर सुणो भाई साधो हो ।
जम के द्वारे मचाया झगड़ा ।टेक।

1. दिशा 2. कामना 3. इच्छा
4. पत्थर 5. चूहा

पंडित छाण पियो जल पाणी

साखी- बैस्नों भया तो क्या भया,
बूझा नहीं विवेक ।
छापा तिलक बनाई करि,
दुग्ध्या लोक अनेक ।

टेक- पंडित छाण पियो जल पाणी,
तेरो काया कहाँ बिटलाणी[1] ।

चरण- वही माटी की गागर होती,
सौ भर के मैं आई ।
सौ मिट्टी के हम तुम होते,
छूती कहाँ लिपटाणी[2] । टेक ।
न्हाय धोय के चौका दीना,
बहुत करी उजलाई ।
उड़ मक्खी भोजन पे बैठी,
बूढ़ी तब पंडिताई । टेक ।

छप्पन कोटि यादव गल गये,
मुनि जन शेष अठ्ठासी ।
तैतीस कोटि देवता गली गया,
समदर[3] मिल गई माटी । टेक ।
हाड़[4] झरी-झरी, चाम[5] झरी-झरी,
मांस झरी दूध आया ।
नदियाँ नीर बहि कर आयो,
रक्त बूँद पशु सरया । टेक ।
जल की मछली जल में जन्मी,
सावड़ कहाँ धोवाई ।
कहे कमाल में पूछूं पंडित,
छूती[6] कहां से आई । टेक ।

1. अपवित्र होना
2 लगना
3. समुद्र
4 हड्डियाँ
5 चमड़ी
6. छुआछूत

अवधू दोनों दीन कसाई

साखी- कटू वचन कबीर के,
सुनत आग लग जाय ।
शीलवंत[1] तो मगन भया,
अज्ञानी जल जाय ॥

टेक- अवधू दोनों दीन कसाई ।

चरण- हिन्दू बकरा मिण्डा मारे,
मुसलमान मुर्गाई ।
कांच खोल[2] के करे हलाला,
रक्त की नदिया बहाई । टेक ।
हिन्दू घड़ा छूवन नहिं देवे,
छूते ही करे लड़ाई ।
वेश्या के पायन तर[3] सोवे,
कहां गई हिन्दूआई । टेक ।
हिन्दूअन की हिन्दूआई देखी,
तुर्कन की तुर्काई ।

अल्ला राम का मरम[4] न जाना,
झूठी सौगंध खाई । टेक ।
मोटी जनेऊ बम्मन पेने,
ब्राम्हणी को नहिं पेनाई ।
जनम-जनम की भई वो सुद्रा,
उने परस्यों[5] तने[6] खाई । टेक ।
नदी किनारे सुअर मरग्या,
मछली नोंचकर खाई ।
सो मछली तुर्कन ने खाई,
कहाँ गई तुर्काई । टेक ।
मुसलमान और पीर औलिया,
सब मिल पंथ चलाई ।
कहे कबीर सुणौ भई साधो,
घर में करै सगाई । टेक ।

1. विवेकी
2. धारदार हथियार
3. पास
4. मर्म (भेद)
5. परोसना
6. तुने

साधौ पांडे निपुन[1] कसाई

साखी- एकै त्वचा हाड़ मल मूत्रा,
एक रूधिर एक गूदा ।
एक बूंद से सृष्टि रची है,
को ब्राम्हण को सुद्रा ।

टेक- साधौ, पांडे निपुन कसाई ।

चरण- बकरी मारि भेड़ी को धावै[2],
दिल में दरद[3] न आई ।
करि अस्नान तिलक दै बैठे,
विधि सो देवि पुजाई ।
आतम[4] मारि पलक में बिनसे,[5]
रूधिर की नदी बहाई । टेक ।
अति पुनित[6] ऊंचे कुल कहिये,
सभा माहि अधिकाई ।
इनसे दिच्छा[7] सब कोई मांगे,
हंसि आवे मोहि भाई । टेक ।

पाप-कटन की कथा सुनावै,
करम करावै नीचा ।
बूड़त दोउ परस्पर दीखे,
गहे बाँहि जम खींचा । टेक ।
गाय वधै सो तुरक कहावै,
यह क्या इनसे छोटे ।
कहै कबीर सुणौ भाई साधौ,
कलि, में ब्राम्हन खोटे । टेक ।

1 पूर्ण
2. तैयार होना
3. दया
4. आत्मा
5. नष्ट होना
6. पवित्र
7. दीक्षा (गुरू बनाना)

मन, तुम नाहक दूंद मचाये

साखी- मन मतंग मानें नहीं,
जब लग गथा[1] न खाय ।
जैसे विधवा इस्त्री,
गर्भ रहे पछताय ।

टेक- मन तुम नाहक[2] दूंद[3] मचाये ।

चरण- करि असनान, छूवो नहिं काहू,
पाती फुल चढ़ावे ।
मुरति से दुनिया फल मांगे,
अपने हाथ बनाये । टेक ।
यह जग पूजै देव-देहरा,
तीरथ व्रत अन्हवाये ।
चलत-फिरत में पांव थकित भयै,
यह दुख कहां समाये । टेक ।
झूठी काया झूठी माया,
झूठे झूठल खाये ।

बाँझिन गाय दूध नहिं देत है,
माखन कहां से पाये । टेक ।
सांचे के संग सांच बसत है,
झूठे मारि हटाये ।
कहैं कबीर जहं वस्तु है,
सहजै दरसन पाये । टेक ।

1. गंदगी
2. बेकार
3. उत्पात

पंडित वाद वदे[1] सो झूठा

साखी- दुविधा[2] जाके मन बसे,
दयावन्त जीव नाही ।
कबीर त्यागो ताहि को,
भूलि देखो जिन्ह नाहीं ।

टेक- पंडित वाद वदे सो झूठा,
राम कहे जगत गति होवे,
तो खाँड[3] कहे मुख मीठा ।

चरण- पावक[4] कहे पाँव[5] जो डाहै,[6]
जल कहै तृष्णा बुझाई ।
भोजन कहे भूख सो भागे,
तो दुनिया तर जाई । टेक ।
नर के संग सूवा हरि बोले,
हरि परताप न जाणै ।
तब कहीं उड़ जाए जंगल में,

तो हरि सुरति[8] न आणे । टेक ।
बिन देखे बिन दरस परस बिना,
नाम लिए क्या होई ।
धन के कहे धनिक जो होई,
तो निर्धन रहे ना कोई । टेक ।
सांची प्रीत विषय माया सो,
हरि भक्तन को फाँसी ।
कहे कबीर एक राम बिनु,
बांधे जमपुर जासी । टेक ।

1. बोलना
2. कष्ट/संशय
3. शक्कर
4. आग (अग्नि)
5. पैर
6. जलना
7. तोता
8- याद (ध्यान)

धातु की धेनु दूध नहीं देती

साखी- पाथर पूजत हरि मिले,
तो मैं पूजु पहाड़ ।
वा से तो चाकी भली,
पीस खाय संसार ।

टेक- धातु की धेनु दूध नहीं देती रे
बीरा म्हारा,
धातु की धेनु दूध नहीं देती ।

चरण- मंदिर में मूर्ति पदराई,[2]
मूक से अन्न नहीं खाती रे ।
उको पुजारी वस्त्र नी पेनावे,
तो नांगी की नांगी बैठी रेती रे।टेक।
2 नाग पंचमी आवे जदे,
कोले[3] नाग मांडती, दूध दही से
पूजती ।

सांची को नाग सामें मिल जावे तो,
पूजा फेंकी ने भागी जाती रे ।टेक।

3 नाना नानी[5] ड़ाबड़ली[6]
ढेला ढेली[7] खेले,
गोदी में लाड़ लड़ाती रे।
सांचा पीव को सुख जब देख्यो तो,
ढेला ढेली को ठुकराती रे। टेक।

4 कहे कबीर सुणो भई साधो,
यो पंथ है निर्वाणी[8] रे।
जो इना पंथ की करे खोजना,
उसे समझो ब्रम्ह ज्ञानी रे। टेक।

1. गाय
2 स्थापित करना
3 दिवार का कोना
4 जिवोत
5. छोटी
6- लड़की
7- खिलौने
8- मोक्ष (मोह+क्षय)

मुल्ला कहो किताब की बातें

साखी- हिन्दू के दया नहीं,
मेंहर तुरक के नाहीं ।
कहे कबीर दोनों गए,
लक चौरासी माही ।।

टेक- मुल्ला कहो किताब की बातें ।

चरण जिस बकरी का दूध पिया,
हो गई मां के नाते ।
उस बकरी की गर्दन काटी,
अपने हाथ छुराते[1] । टेक ।

काम कसाई का करते हो,
पाक करो कलमा ते ।
यह मत उल्टा किसने चलाया,
जरा नहीं लजाते । टेक ।

एक वृक्ष से सकल पसारा,

कीट पतंग जहाँते ।
दूजा कहो कहाँ से आया,
तापर[2] हमें खिजाते । टेक ।

कहे कबीर सुणों भई साधो,
यह पद है निर्वारा[3] ।
तनक[4] स्वाद जिव्या के कारण
साफ नरक में जाते । टेक ।

1. छुरी
2. उस पार
3. निर्वाण पद
4. तनिक (थोड़ा सा)

जा बसे निरंजन राय

साखी- कस्तूरी कुण्डली बसे,
मृग ढूंढे वन माहि ।
जैसे राम घट-घट बसे,
दुनिया जाने नाही ।

टेक- जा बसे निरंजन राय,
बैकुण्ठ कहां मेरे भाई ।

चरण- कितना ऊंचा कितना नीचा
कितनी है गहराई ।
अजगर पंछी फरे भटकता,
कौन महल को जाई । टेक ।

जो नर चुन-चुन कपड़ा पेरे,
चाल निरखता[1] जाई ।
चार पदारथ पाया नाही,
मुक्ति की चाह नाही । टेक ।

कोई हिन्दू कोई तुरक कहावे,
कोई बम्मन बन जाए ।

मिटा स्वांस जब चला पिंजरा[2],
एक बरण हो जाय । टेक ।

बंदी गऊ कबीर ने छुड़ाई,
ले गंगा को न्हाई ।
खोल डुपट्टा आंसू पोछे,
चारा चरो मेरी माई । टेक ।

आदा सरग[3] तक पहुंचे हंसा,
फिर माया घर लाई ।
ले माया नरक में डूबी,
लक चौरासी पाई । टेक ।

ओंदा आया, ओंदा जाया,
ओंदा लिया बुलाई ।
कहे कबीर ओंदी का जाया,
कभीयन सीधा होई । टेक ।

1. देखना
2. शरीर
3. स्वर्ग
4. उल्टा

नाम से मिल्या ना कोई

साखी- हँसो का एक देश है,
जात नही व्हां कोय ।
कागा करतब ना तज सकें,
तो हंस कहाँ से होय ।

टेक- नाम से मिल्या ना कोई रे साधो भाई
नाम से मिल्या ना कोई ।

चरण- ज्ञानी मरग्या ज्ञान भरोसे,
सकल भरमणा मांई ।
दानी मरग्या दान भरोसे,
कोड़ा[1] लक्ष्मी खोई ।
नाम से मिल्या.....

ध्यानी मरग्या ध्यान भरासे,
उल्टी पवन चड़ाई ।
तपसी मरग्या तप भरोसे,

नाहक देह सताई ।
नाम से मिल्या.....

काठ[2] पखाण[3] और सुन्ना चाँदी,
की सुन्दर मूरत बणाई ।
ना मंदिर में ना मज्जित में,
तीरथ बरत में नाई ।
नाम से मिल्या ना

खोजत बुझत सतगुरु मिलग्या,
सकल भरमणा ढोई ।
कहै कबीर सुणो भाई साधो,
आप[4] मिटें तो गम होई ।
नाम से मिल्या ना कोई.....

1. पैसा कोड़ी (धन)
2. लकड़ी
3. धातु
4. संकीर्ण मनोवृत्ति (घमंड)

म्हारो हीरो हेराणो कचरा में

साखी- पूरब दिशा हरी को बासा,
पश्चिम अल्लह मुकामा ।
दिल में खोजि दिलहि मा खोजो,
इहै करीमा रामा ।

टेक- म्हारो हीरो हेराणो[1] कचरा में
पाँच पचीस का झगड़न में

चरण- कोई पूरब कोई पक्षीम ढूंड़े हो ।
कोई पानी कोई पथरों में । टेक ।
कोई तीरथ कोई बरत करत है हो ।
कोई माला की जपरन में । टेक ।
सुनीजन मूनीजन पीर ओल्या हो ।
भूली गया सब नरवरन में । टेक ।
धर्मदास के हीरा पाया हो ।
बाँद लीया हैं हँसलन[2] में । टेक ।

1. गुम हो जाना
2. विवेकी होंना

मानुष तन बौराणा

साखी- गल गुस्सा को काटिये,
मिया कहर को मार।
जो पाँचों बिसमिल्ला करें,
तो पावे दीदार।

टेक- मानुष तन बौराणा हंसा,

चरण- एक बकरी का बच्चा पाला,
उसे धान खिलाया।
पाल पोस के मोटा किया,
पूजा के कारण चढ़ाया। टेक।

नर जीव आगे सरजीव ठाढ़ा,
खेंच खड़ग मस्ताना।
सोस काट भूमि पर डारा,
कौन देवत को चढ़ाया। टेक।

बाहर से एक मुर्दा लाया,
लुण मिरच सब साथ।

उस मुर्दे की पकी रसोई,
घर-घर होय बखाण । टेक ।

घर में एक मुर्दा होया,
उसे देख डर पाया ।
इस मुर्दे को जल्दी निकालों,
जम होई ने डेरा दिया । टेक ।

कहे कबीर सुणो भई साधो,
यो पंथ है निर्वाण ।
जो इनी ममता ने बस करे,
वो ही संत सुजान । टेक ।

बेराग कठे है मेरा भाई

साखी- सेख सबूरी बाहिरा,
क्या हज काबै जाइ ।
जाकि दिल साबित[1] नहीं,
वाकौ[2] कहाँ खुदाय ।

टेक- बेराग कठे[3] है मेरा भाई,
सब जग बंधिया[4] भरम के माही ।

चरण- क्षर एक ना एक है,
अक्षर ना कोई जप तापाई ।
बावन अक्षर खोल कोल में,
इनसे बचे ना कोई राई । टेक ।
ज्ञान ध्यान जप तप नहीं,
साधन वेद कुराण ना बाणी ।
छः राग छत्तीस रागणी,
या सब काल खवाणी[5] । टेक ।
दस और दोय तीन और तेरह,

यह मिल काल रचाई ।
ओहं सोहं पोहं जोहं,
इनकी तो सफा उड़ाई हो । टेक ।
योगी जती और सती सन्यासी,
सब बंधिया भरम के माही ।
अनेक मुनिजन भूखों मर गया,
म्हने ना कोई देह ये सताई ।टेक।
तेरा बाटी अजब झरोखा,
ये मिल गोसे आई हो ।
कहे हो कबीर सुणो भाई साधो,
गुरू बिन गेला[6] नाही । टेक ।

1. शुद्ध (पवित्र)
2 उसको
3. कहाँ
4. आसक्त (बंधा हुआ)
5. समाना
6. साथ (सद्मार्ग)

तन काया का मन्दिर

साखी- मन मंदिर दिल द्वारखा,
काया काशी जान ।
दस द्वारे का पिंजरा,
याहि[1] में ज्योत पहचान ।

टेक- तन काया का मंदिर साधु भाई,
काया[2] राम का मंदिर ।
इना मंदिर की शोभा पियारी,
शोभा अजब है सुन्दर । टेक ।
पाँच तीन मिल बना है मंदिर,
कारीगर घड़ा-घड़न्तर ।
नौ दर[3] खुल्ले दसवाँ बन्द कर,
कुदरत कला कलन्दर । टेक ।
इना मंदिर में उन्मुख[4] कुलवा[5],
वहाँ है सात समुन्दर ।
जो कोई अमृत पिवे कुवे का,
वाका भाग बुलन्दर । टेक ।

अनहद घण्टा बाजे मन्दिर में,
चढ़ देखो सुन अन्दर।
अखण्ड रोशनी होय दिन राती,
जैसे रोशनी चन्दर। टेक।

बैठे है साहेब मन्दिर में,
ध्यान धरो उनके अन्दर।
कहे कबीर साहब करो नेम से पूजा,
जब दरसेगा घट अन्दर। टेक।

1. इसी में
2. शरीर
3. द्वार
4. उल्टा
5. कुआ (खोपड़ी) (विचारधारा)

अमल करे सो पाई

साखी- कहंता[1] तो बहुत मिला,
गहंता[2] मिला न कोय ।
सो कहंता बहि जान दे,
जो न गहंता होय ।

टेक- अमल[3] करे सो पाई रे साधो भाई
अमल करे सो पाई ।
जब तक अमल नशा नही करता,
तब लग मजा न आई ।

चरण- आन्दो[4] हाथ लिए कर दीपक,
कर परकास दिखाई ।
औरन आगे करे चाँदनो,
आप अंधेरा का माई । टेक ।
आन्दो हाथ अन्दर नही दरसे[5],
जग में भलो कहाई ।
दूत पूत का दानी रे बनकर,

पाखंड पेट भराई । टेक ।
काजी पंडित पच पच हारे,
बेद कुराण के मांई ।
भणिया गुणिया ये नही समझे,
थाने कुण समझाई । टेक ।
गुरु शरणो में माली लिखे लेखणो,
सब सतन के माई ।
है कोई ऐसा फक्कड़ जग में,
अपना अमल जमाई । टेक ।

1. कहने वाले
2. कहे पर चलने वाला
3. आचरण में लाना
4. अन्धा
5. दिखना

ना जाने तेरा साहेब कैसा है

साखी- कांकर पाथर जोरि[1] कै,
मस्जिद लई बनाय ।
ताँ चढ़ी मुल्ला बांग[2] दे,
बहरो भयो खुदाय ।

टेक- ना जाने तेरा साहेब कैसा है ।

चरण- मस्जिद भीतर मुल्ला पुकारै,
क्या साहेब तेरा बहिरा है ।
चिउंटी के पग नेवर बाजै,
सौ भी साहेब सुनता है । टेक ।

पंडित होय के आसन मारै,
लम्बी माला जपता है ।
अंतर तेरे कपट कतरनी,
सो भी साहेब लखता है । टेक ।

ऊंचा नीचा महल बनाया,
गहिरी नेव[3] जमाता है ।
चलनें का मनसूबा[4] नाही,
रहने को मन करता है । टेक ।

कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी,
गाड़ि जमीं में धरता है।
जिस लहना है सो लै जैहै,
पापी बहि बहि मरता है। टेक।

सतवन्ती को गजी[5] मिलै नहि,
बैश्या पहिरै खासा[6] हैं।
जेहि घर साध भीख न पावै,
भइवा खात बतासा हैं। टेक।

हीरा पाय परख नहि जानै,
कौड़ी परख न करता है।
कहत कबीर सुनो भाई साधो,
हरि जैसे को तैसा हैं। टेक।

1. जोड़कर
2. नमाज पढ़ना
3. नींव
4. इच्छा (तैयारी)
5. साधारण वस्त्र (मलमल)
6. मंहगे वस्त्र

पंडित तुम कैसे उत्तम कहाये

साखी- पंडित और मशालची,
दोनो को सूझै नाहि ।
औरन को करे चाँदनो,
आप अंधेरा मांई ।

टेक- पंडित तुम कैसे उत्तम कहाये ।टेक।

चरण- एक जोइनि[1] से चार बरन[2] भे,
हाड़ मास जीव गूदा ।
सुत परि दूजे नाम धराये,
वाको करम न छूटा । टेक ।
छेरी खाये भेड़ी खाये,
बकरी टीका टाके ।
सरब[3] माँस एक है पंडित,
गैया काहे बिलगाए[4] । टेक ।
कन्या जाति जाति की बेचत[5],
कौने जाति कहाये ।
आपन कन्या बेचन लागे,
भारी दाम चढ़ाये । टेक ।
जहँ लगि पाप अहै दुनियाँ में,
सो सब कांध चढ़ाये ।
कहै कबीर सुनो हो पंडित,
घर चौरासी या छाये । टेक ।

1. योनि 2. वर्ण 3. सभी
4. अलग करना 5 दहेज प्रथा

जब मैं भूला रे भाई

साखी- हंसा तु तो सबल था,
हलुकी[1] अपनी चाल ।
रंग कुरंगे रंगिया,
किया और लगवार ।

टेक- जब मैं भूला रे भाई,
मेरे सतगुरू जुगत[2] लखाई[3] ।
किरिया करम अचार मैं छाँड़ा,
छाँड़ा तीरथ का न्हाना ।
सगरी दुनिया भई सयानी,
मैं ही इक बौराना । टेक ।
ना मैं जानू सेवा बन्दगी,
ना मैं घण्ट बजाई ।
ना मैं मूरति धरि सिंघासन,
ना मैं पुहुप[4] चढ़ाई । टेक ।
ना हरि रीझै जप तप कीन्है,

ना काया के जारे ।
ना हरि रीझै धोती छाँड़ै,
ना पाँचों[5] के मारे । टेक ।
दाया राखि धरम को पालै,
जगसूँ[6] रहै उदासी ।
अपना सा जोव सबको जानै,
ताहि मिलै अविनासी । टेक ।
सहै कुसब्द वाद को त्यागै,
छाँड़ै गर्व गुमाना ।
सत्तनाम ताहि को मिली है,
कहे कबीर दिखाना । टेक ।

1 तुच्छपन
2. युक्ति
3. बताना
4. फूल
5 शारीरिक लक्षण
6. संसार से

भक्ति करो ब्रह्माण्ड में

साखी- गुरू लोभी सिष लालची,
दोनों खेले दाव।
दोनों बपुरे बूडही,
चढ़ी पत्थर की नाव।

टेक- भक्ति करो ब्रम्हाण्ड में साधु-2
ऐसी भक्ति करो मन मेरे,
आठ पहर आनन्द में हो।

चरण- बामण तो माँगण[1] में फंसग्या[2],
बणिया फंसग्या धन में हो।
भोपा जाय मड़ी[3] में फंसग्या,
नहीं देव मड़ी मे हो। टेक।
गिरी पुरी और भारती,
पूज रहे पत्थर में हो।
जादू टोटका[4] मुठ[5] साधके,
लोग लगे लूटन में हो। टेक।

बाबा तो खावण[1] में फंसग्या,
चेला फंसा मुण्डन में हो।
जोगी जाय जंगल में घुसग्या,
नहीं देव जंगल में हो। टेक।
कहे कमाली कबीर की चेली,
ढुंढ लिया सब खंड[6] में हो।
कहे कबीर सुणो भाई साधो,
छोड़ दे पाखंड को हो। टेक।

1. मांगना
2. लगना
3. आश्रम
4. जादू-टोना
5. जादू का एक तरीका
6. चारों ओर

घट-घट में रामजी बोले

साखी- एक समाना सकल में,
सकल समाना ताहि ।
कबीर समाना बुझ[1] में,
वहाँ दूसरा नाहि ।

टेक- घट-घट में रामजी बोलेरी,
परगट[2] पीयाजी बोले री
मन्दिर में कई डोलती,
फिरे म्हारी हैली ।

चरण- मूरत कोर[3] मन्दिर में मैली,[4]
या मूख से कबी व बोली वो हैली ।
ई सब दरवाजे बन्द कर राखे,
बिना हुकुम[5] कुण खोलेरी ।टेक।
या रामनाम की बालोद[6] उतरी,
बिना ग्राहाक कुण खोले वो हैलो ।
मूरख ने कई ज्ञान बतावे,

राई परबत के होले री । टेक ।
थारी नाबी कमल से गंगा निकली,
पाँची कपड़ा धोईरी हैली ।
बिन साबुन से दाग कटेरी,
निर्मल काया धोई लेरी । टेक ।
जहोरी बजार लग्यो घट भीतर
दील चाहै जो लइलेरी हैली ।
हीरा तो जोहरी ने बीन लिया,
कोई मूरख काँकरा[7] तोलेरी ।टेक।
नाथ गुलाबी सतगुरू मिल गये,
जिनने दिल की घुंडी खोली वो हैली
भवानी नाथ शरण सतगुरू की,
हरभज निर्मल होई लेरी । टेक ।

1. विवेक
2. प्रकट (प्रत्यक्ष)
3. बनाना [बनाकर]
4. रखना
5. आज्ञा
6. अधिक मात्रा में
7. कंकर [पत्थर]

– संदर्भ ग्रन्थ –

निम्न पुस्तकें एकलव्य पुस्तकालय में पढ़ने हेतु उपलब्ध है।

1. कहे कबीर (चन्द्रदेवसिंह)
शकुन प्रकाशन 3625, सुभाष मार्ग, नई दिल्ली

2. कबीर (प्रभाकर माचवे)
साहित्य अकादमी 35 फिरोजशाह मार्ग नई दिल्ली

3. कबीर ग्रन्थावली (डॉ. पारसनाथ तिवारी
राका प्रकाशन, 80 ए, मोतीलाल नेहरु रोड़
इलाहाबाद

4. कबीर: परिचय तथा रचनाएँ (सुदर्शन चोपड़ा)
हिन्द पाकेट बुक्स जी. टी. रोड़, नई दिल्ली

5. कबीर मीमांसा (रामचन्द्र तिवारी)
लोक भारती प्रकाशन 15 ए, महात्मा गांधी मार्ग
इलाहाबाद

6. कबीर शब्दावली (गंगाशरण शास्त्री)
कबीर वाणी प्रकाशन सी 23/5 वाराणसी

7. कबीर धारा "मन लागो यार फकीरी में"
डायमंड पाकेट बुक्स, 27/5 दरियागंज नई दिल्ली

8. पारख प्रकाश कबीर संस्थान साहित्य
(संत अभिलाषदास)
पारख प्रकाश कबीर संस्थान प्रीतमनगर सुलेम सराय

9. कबीरा खड़ा बाजार में (भीष्म साहनी)
राजकमल प्रकाशन 8 नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली

10. कबीर (डॉ. विजयेन्द्र स्नातक)
राधाकृष्ण प्रकाशन 2/38 अंसारी मार्ग नई दिल्ली

11. कबीर (हजारीप्रसाद द्विवेदी)
राजकमल प्रकाशन 1 बी नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली

12. मालवा के कबीर भजनों के गायकों की हस्त-लिखित भजन डायरियाँ।

13. मालवा क्षेत्र के सम्पूर्ण कबीर भजनों का ध्वन्यांकन संग्रह [ऑडियो कैसेटस्]

14. विभिन्न कबीर मठों के कबीर बीजक एवं अन्य साहित्य।

15. कबीर के प्रामाणिक भजनों का संग्रह।

यह पुस्तिका कबीर भजन एवं विचार मंच के निम्न साथियों से प्राप्त कर सकते है।

(1) श्री प्रहलादसिंह टिपाण्या, लून्याखेड़ी तह. तराना [उज्जैन]
(2) श्री नारायणसिंह मालवीय, बरण्डवा तह. तराना [उज्जैन]
(3) श्री हीरालाल सिसौदिया, अशोकनगर [उज्जैन]
(4) श्री मांगीलाल मालवीय, दोन्ता तह. टोकखुर्द [देवास]
(5) श्री राजाराम डांगी झोंकर [शाजापुर]
(6) श्री गिरधारीलाल बागरी मोहल्ला देवास
(7) श्री प्रहलाद गोयल हाटपीपल्या देवास
(8) श्री पूनमचन्द भाटी, बागली देवास
(9) श्री देवीलालजी, पीरपाल्या तहसील सोनकच्छ (देवास)
(10) श्री राजेश बिश्नोई, सन्दलपुर तहसील खातेगाँव देवास
(11) श्री मोहनलाल देवड़ा, मानपुर तहसील देपालपुर इन्दौर
(12) श्री भेरुसिंह चौहान, बजरंगपुरा तह. महू इन्दौर

जो जाणे पर पीर

[कबीर भजनों का संकलन]

संस्करण – तृतीय
मार्च 1994

☐ प्रकाशक ☐

एकलव्य

6, एरिना रोड़ राधागंज देवास (म. प्र.)

☎ : 74096

मूल्य 2-00 रूपये

मुद्रक –

राजदीप प्रिंटर्स

156, नहार दरवाजा देवास [म.प्र.]

कबीर भजन एवं विचार मंच

संक्षिप्त परिचय

एकलव्य संस्था विगत दस वर्षों से शिक्षा, पर्यावरण, जन विज्ञान व संस्कृति के क्षेत्र में कार्यरत है। इन कार्यक्रमों के दौरान पिछले कई वर्षों से कबीर भजनों व विचारों को सुनने समझने का अवसर मिला। उन्हीं साथियों की पहल व भागीदारी से 2 जुलाई 91 को "कबीर भजन एवं विचार मंच" का गठन किया गया। यह मंच कबीर के विचारों से प्रेरित मालवा क्षेत्र के विभिन्न व्यवसाय में लगे साथियों जैसे शिक्षक, छात्र, कृषक, छोटे दुकानदार व मजदूर इत्यादि का खुला मंच है। मंच का प्रमुख उद्देश्य कबीर के विचारों का लोकव्यापीकरण करना है।

मंच की दशा और दिशा

● विगत 2 जुलाई 91 से अब तक लगातार तीन वर्षों की मासिक गोष्ठियों के माध्यम से लगभग 500 भजन मण्डलियों से सम्पर्क बना एवं विचारों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया शुरू हुई। इस सारी प्रक्रिया

मिला। विगत एक वर्ष से देवास जिले की टोकखुर्द, बागली, सोनकच्छ एवं देवास तहसीलों में कबीर के पदों का भाषाशास्त्रीय अध्ययन एवं उनका व्यवस्थित लिपिकरण का कार्य भारतीय इतिहास शोध संस्थान दिल्ली के सहयोग से प्रारम्भ किया। साथ ही निम्न स्थानों पर नियमित गोष्ठिया प्रारम्भ हुई।

स्थान	दिनांक	समय
1. एकलव्य पुस्तकालय 6, एरिना रोड़ देवास	प्रतिमाह 2 तारीख	रात्रि 9 बजे
2. बहाई धर्मशाला स्टेशन रोड़ मक्सी	प्रतिमाह 25 तारीख	रात्रि 9 बजे
3. गोपालपुरा हाटपिपल्या	प्रतिमाह 8 तारीख	रात्रि 9 बजे

- सामाजिक समता एवं बदलाव में रुचि रखने वाले साथियों को मालवा के 16 स्थानों पर विभिन्न संतों, महापुरुषों से सम्बन्धित साहित्य भी उपलब्ध कराया।

- कबीर भजनों के 2 कैसेट भी मंच के साथियों के सहयोग से निकाले गए, जिन्हें एकलव्य देवास से प्राप्त कर सकते हैं।

- कबीरा सोई पीर है, जो जाणे पर पोर -

[सहयोग राशि 25 रुपये मात्र]

पुस्तिका का तीसरा संस्करण

पुस्तिका का तीसरा संस्करण आपके हाथों में है। इसके पहले दो संस्करण की 3000 प्रति निकाल चुके हैं। यह पुस्तिका विभिन्न स्थानों पर साथियों द्वारा पंसद की गई। पिछले दिनों दूसरे प्रदेशों में भी मंच द्वारा कार्यक्रम दिए जाने के अवसर पर कबीर भजनों के मालवी शब्दों को समझने में कुछ दिक्कते हुई। अतः इस बार कठिन शब्दों के शब्दार्थ भी दिए जा रहे है।

मालवा ये गाये जाने वाले 30 भजनों की इस पुस्तिका के अधिकांश भजन मंच के साथियों से सुनकर लिए गए है। साथ ही साथियों की हस्तलिखित डायरियों से भी कुछ भजन संकलित किए गए है।

सहयोग एवं सुझाव सादर आमंत्रित है।

– कबीर भजन एवं विचार मंच
द्वारा– एकलव्य एरिना रोड़ राधागंज देवास

मार्च 1994